अमर उजाला

बरेली
शनिवार, 28 अक्तूबर 2017

PAGE NO. 11 : TOP LEFT

फैटी लीवर की बीमारी से बचना है तो दिनचर्या को रखें नियमित

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली।

एसआरएमएस मेडिकल इंस्टीट्यूट में शुरू हुई कांफ्रेंस

बिना शराब पिए भी लिवर खराब हो जाता है। यकृत की इस गंभीर बीमारी को एनएएफएलडी यानी नॉन एल्कोहलिक फैटी लिवर डिसीज कहते हैं। खास बात यह कि दवाएं भी इस बीमारी में असरकारक नहीं होती हैं। शुक्रवार को यह जानकारी हैदराबाद से आए डॉ. पीएन राव ने एसआरएमएस मेडिकल इंस्टीट्यूट में शुरू हुई अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस यूपी एपीकॉन मेडिसिन अपडेट में दी। उन्होंने इस बीमारी से बचने के लिए समय-समय पर जांच कराने की सलाह दी।

एसआरएमएस के जनरल मेडिसिन विभाग और एसोसिएशन ऑफ फिजीशियंस के सहयोग से 29 अक्तूबर तक यह कांफ्रेंस चलेगी। इसमें देश-विदेश के विशेषज्ञ शामिल हो रहे हैं। पहले दिन डॉ. राव ने बताया कि जिन्हें डायबिटीज और हायपरटेंशन है उन्हें दिल की भी बीमारी होती है। ऐसे में लिवर में फैट की शिकायत अधिक होती है। इससे लिवर के सेल डैमेज हो जाते हैं। आगे चलकर यह समस्या ठीक वैसे ही होती है जैसे एक शराब पीने वाले के लिवर के साथ होता है। डॉ. राव ने बताया कि इसमें दवाएं असरदार नहीं है। इससे बचाव का एक ही तरीका है कि दिनचर्या दुरुस्त रखी जाए। कांफ्रेंस का शुभारंभ रुहेलखंड विवि के कुलपति प्रो. अनिल शुक्ला ने किया। इस दौरान एसआरएमएस ट्रस्ट के सचिव आदित्य मूर्ति, डॉ. निर्मल यादव, प्रो. शरद जौहरी, डॉ. मेहश गुप्ता, डॉ. स्मिता, डॉ. एमपी रावल मौजूद रहे।

इरीटेबल बाउल सिंड्रोम के मरीज भारत में अधिक

बीएचयू के डॉ. विनोद दीक्षित ने पेट से जुड़ी बीमारी आईबीएस यानी इरीटेबल बाउल सिंड्रोम के बारे में बताया। कहा कि यह बड़ी आंत को प्रभावित करने वाली बीमारी है। इससे पेट में दर्द, ऐंठन, सूजन, गैस, कब्ज और दस्त की समस्या होती है। लंबे उपचार और नियमित दिनचर्या से ही इससे छुटकारा पाया जा सकता है। इस बीमारी से दुनिया में 15 फीसदी लोग प्रभावित हैं। भारत में इनकी संख्या अधिक है। एसजीपीजीआई लखनऊ से आए डॉ. वीए सारस्वत ने लिवर सिरोसिस के संबंध में बताया। कहा कि इसमें फास्ट फूड सब से अधिक घातक है।